तालिका संख्या 4: जिला चरखी दादरी: महिलाओं की शिक्षा का स्तर

शैक्षिक स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
अशिक्षित	6	6
प्राथमिक स्तर	6	6
उच्च प्राथमिक स्तर	5	5
माध्यमिक स्तर	20	20
उच्च माध्यमिक स्तर	22	22
स्नातक स्तर	18	18
परास्नातक स्तर	23	23
कुल योग	100	100
श्रोत: शोधार्थी द्वारा 2021 में किया गया क्षेत्र सर्वेक्षण		

तालिका संख्या 4 चरखी दादरी जिले में महिलाओं की साक्षरता दर को दर्शाती है। क्षेत्र सर्वेक्षण के अनुसार 100 उत्तरदाताओं में से केवल 6 उत्तरदाता निरक्षर हैं, 6 उत्तरदाता प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, 5 उत्तरदाताओं को उचच प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त हुई है, 20 उत्तरदाताओं ने माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त की है, 22 उत्तरदाताओं ने उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की है, 18 उत्तरदाताओं ने स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त की है और 23 उत्तरदाताओं को उनकी स्नातकोत्तर और उच्च शिक्षा प्राप्त हुई है।

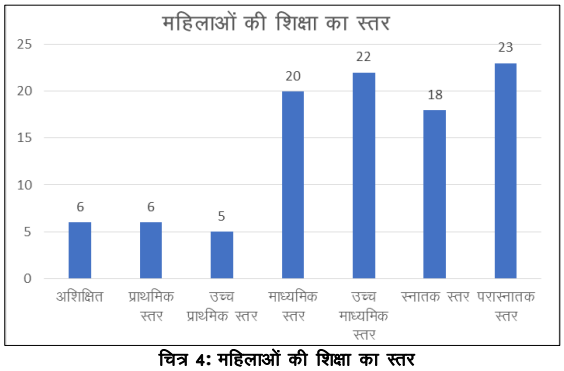

चित्र 4: महिलाओं की शिक्षा का स्तर

महिलाओं की आर्थिक/व्यावसायिक स्थिति

महिलाओं की आर्थिक भागीदारी उनकी स्थिति निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जो महिलाएं अच्छी तरह से व्यावसायिक गतिविधियों में लगी हुई हैं, उन्हें आमतौर पर उन लोगों की तुलना में अधिक पुरस्कृत किया जाता है जो पारिवारिक खर्च में भाग लेने के लिए नहीं हैं। उनकी कम निर्भरता उन्हें परिवार में कमजोर बनाती है। अधिकांश मामलों में यह पाया गया कि हालांकि वे अपने परिवार के लिए कमाती हैं लेकिन परिवार के कमाऊ सदस्यों के रूप में किसी भी प्रकार का महत्व नहीं पाती हैं या बड़े निर्णय लेने में भाग नहीं ले सकती हैं। यह सामाजिक मूल्य के लिए महिलाओं का प्रतिनिधित्व करता है। सभी महिलाओं को आर्थिक क्षेत्र में भागीदारी का अवसर नहीं मिल पाता है। यहां तक कि कुछ प्रतिवादी भी सोचते हैं कि उनकी प्राथमिकता होने के बावजूद उच्च वेतन वाले काम नहीं हैं।

तालिका संख्या 5: जिला चरखी दादरी: उत्तरदाताओं की व्यावसायिक स्थिति

व्यवसाय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
बुटीक/पार्लर/दुकान	14	14
अध्यापक	22	22
गृहिणी	56	56
सरकारी नौकरी	8	8
कुल योग	100	100
श्रोत: शोधार्थी द्वारा 2021 में किया गया क्षेत्र सर्वेक्षण		

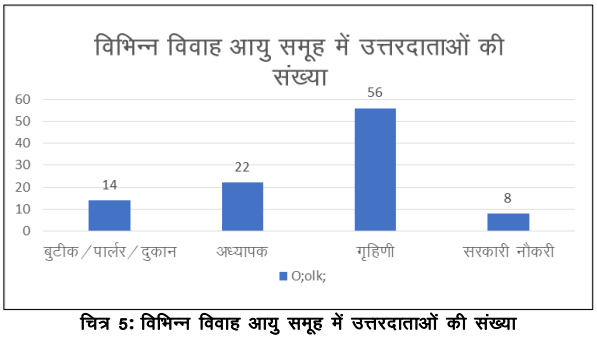

चित्र 5: विभिन्न विवाह आयु समूह में उत्तरदाताओं की संख्या

तालिका संख्या 5 और चित्र 5 उन महिलाओं के परिणाम को दर्शाता है जो विभिन्न कार्यों और व्यवसायों में शामिल हैं। अध्ययन में पाया गया कि 14 महिलाएं बुटीक/पार्लर और दुकान चलाती हैं, 22 महिलाएं निजी क्षेत्र में शिक्षिका हैं, 56 महिलाएं गृहिणी हैं और 8 महिलाओं का सबसें कम प्रतिशत सरकारी नौकरी में है।

परिवार की मासिक आय

4–5 सदस्यों वाला अधिकांश परिवार किसी एक व्यक्ति की आय पर निर्भर करता है। शादी के बाद कुछ ससुर और सास अपनी बहू के बाहर नौकरी करने का समर्थन नहीं करते हैं, लेकिन अधिकांश शिक्षित परिवार नौकरी के लिए प्रोत्साहित करते हैं तथा उनकी आर्थिक समस्या का समाधान करते हैं। आय एक परिवार में महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को दर्शाती है।

तालिका संख्या 6: चरखी दादरी: परिवार की मासिक आय

मासिक आय (हजार में)	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
0.10	7	9ण्72
10.20	27	37ण्5
20.30	24	33ण्33
30.40	9	12ण्5
40.50	5	6ण्95
कुल योग	72	100
श्रोत: शोधकर्ता द्वारा 2021 में किया गया क्षेत्र सर्वेक्षण		

तालिका संख्या 6 महिलाओं की आय के विभिन्न स्तरों के परिणाम दर्शाती है। मूल रूप से अधिकांश परिवार 10–20 हजार एंव 20–30 हजार प्रति माह के बीच कमाते हैं। 37.5 प्रतिशत 10–20 हजार कमाते हैं और 33.33 प्रतिशत परिवार 20–30 हजार प्रति माह कमाते हैं। 12.5 प्रतिशत 30–40 हजार और केवल 6.95 प्रतिशत 50 हजार से ऊपर की आय पाते हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन से महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का पता चलता है। अधिकांश महिलाओं को उच्च शिक्षा के बेहतर अवसर मिलते हैं। लेकिन अधिकांश महिलाएं उत्पादक कार्यों में संलग्न नहीं हैं। क्षेत्र सर्वेक्षण के अनुसार अधिकांश उत्तरदाता 30–40 वर्ष के आयु वर्ग के हैं। अधिकांश उत्तरदाताओं का विवाह उनके 20 वर्षों में हो जाता है। उत्तरदाताओं में अधिकांश गृहिणियां हैं। क्षेत्र सर्वेक्षण के अनुसार केवल 4.28 प्रतिशत उत्तरदाता सरकारी नौकरियों में शामिल हैं और उत्तरदाताओं का उच्चतम प्रतिशत गृहिणियां हैं जो 65.72 प्रतिशत है। अधिकांश उत्तरदाता अपनी छोटी पसंद और निर्णयों के लिए अपने पतियों पर निर्भर हैं। शहरी क्षेत्र की महिलाएं कानूनी अधिकारों के बारे में जानती हैं लेकिन शायद ही किसी दूसरे की मदद लेती हैं। बदलते समय के साथ महिलाओं ने समाज में अपनी स्थिति बदली है। वे जीवन में अपना लक्ष्य प्राप्त करती हैं और जीवन के हर क्षेत्र में खुद को साबित करने की कोशिश करती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. अग्रवाल ए, (2013)। '21वीं सदी में महिलाओं की भूमिका', परिवार, समुदाय और उपभोक्ता विज्ञान की पत्रिका–आईएसएन 2320–902 खंड (2) पेज 14–17।
2. बाला ए, (2017)। 'हरियाणा में सामाजिक विकासरू क्षेत्रीय विश्लेषण, अकादमिक अनुसंधान और विकास का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, आईएसएसएन 2455–4197, वॉल्यूम। (2) पेज 145–151।
3. गूदे डब्ल्यू, (1971)। 'बल और परिवार में हिंसा', विवाह और परिवार की पत्रिका, खंड (3), पेज 624–636।
4. मुहम्मद रैंड शहनाज पी, (2015)। 'घरेलू हिंसा में महिलाओं के प्रभाव की सामाजिक–आर्थिक स्थितिः बांग्लादेश के शहरी क्षेत्र का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण' सामाजिक विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, वॉल्यूम। 3), आईएसएसएन 2324–8033, आईएसएसएन 2324–8041।
5. जैन एट, (1997)। 'भारत में महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में उद्धृतः एक विचार।